तो लोगों की करदान क्षमता अधिक होगी।

3. आय और धन का वितरण
(Distribution of Income and Wealth)

देश की आय तथा धन का वितरण भी लोगों की करदेय क्षमता को प्रभावित करता है। चूंकि एक धनी समुदाय कराधान की एक अपेक्षाकृत ऊँचा प्रतिशत अदा कर सकता है अतः आय के वितरण की एक ऐसी व्यवस्था जो कि कुछ थोड़े से लोगों के हाथों में ही धन को केन्द्रीत करती है। उस व्यवस्था के मुकाबले जो आय का न्यूनाधिक रूप में समान वितरण करती है। उनकी कर अदा करने की योग्यता अधिक होती है।

4. कराधान का स्वरूप
(Pattern of Taxation)

करदेय क्षमता इस बात पर भी निर्भर करती है कि कर किस रूप में तथा किस तरीके से लगाये जाते है। करप्रणाली का आधार जितना अधिक व्यापक होता है करदान क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। A. Moray ने इस तथ्य को निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रस्तुत किया है—

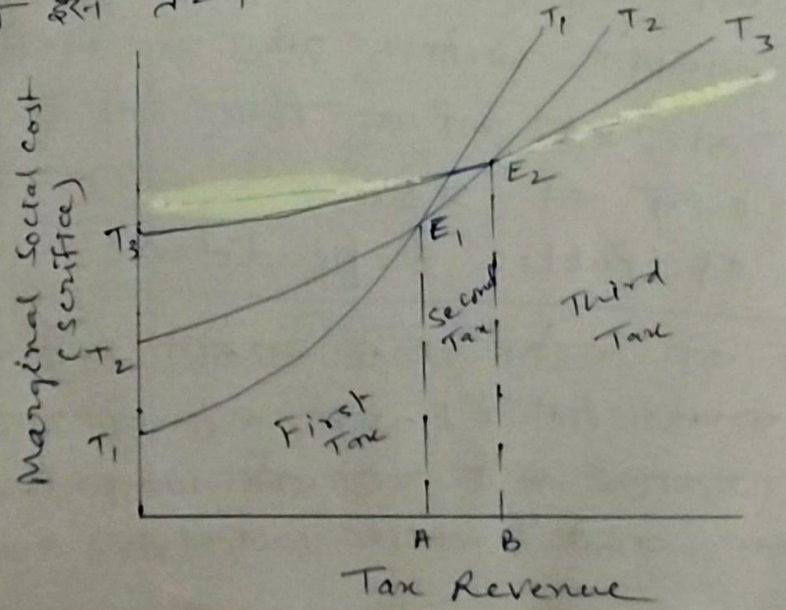

स्तर के चित्र से स्पष्ट है एक जब T_1T_1 तथा T_2T_2 दोनों सम्भावित रेखा एक दूसरे को E_1 बिन्दु पर काटते है तो पहला कर अपनी अधिकतम सीमा प्राप्त कर चुका जाता है इस स्थिति में OA कर आय प्राप्त होता है। अधिक आय प्राप्त करने के लिए जब अधिक कर लगाये जायेंगे तो T_2T_2 तथा T_3T_3 रेखा एक दूसरे को E_2 बिन्दु पर काटते हैं तो द्वितीय कर अपनी अधिकतम सीमा को प्राप्त कर लेता है। जिससे OB कर आय प्राप्त होती है। इसीप्रकार और अधिक आय प्राप्त करने के लिए तीसरा कर लगाया लगाया जा सकता है। अतः एकल कर प्रणाली से बहुल कर प्रणाली अधिक अच्छी समझी जाती है। प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष करो का सम्मलीकरण करदेय क्षमता को बढाता है।

5. आय की स्थिरता
(Stability of Income)

जिन देशो में लोगों की आय स्थिर होती है वहाँ की करदेय क्षमता अपेक्षाकृत अधिक होती है। कृषि प्रधान देशो के मुकाबले औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशो में लोगो की आय अधिक स्थिर होती है।

6. सरकारी व्यय की प्रकृति
Nature of Public Expenditure

किसी देश की करदेय क्षमता सरकारी खर्च की प्रकृति से भी प्रभावित होती है। यदि कराधान द्वारा एकत्र आय को उत्पादक कार्यों पर खर्च किया जाता है तो करदेय क्षमता बढती है जबकि अनुत्पादक कार्यों पर

किया गया सरकारी व्यय करदेय क्षमता को घटाता है।

7. करदाता की मनः स्थिति
(Psychology of the Taxpayer)

करदाताओं की मनः स्थिति का भी ~~बढ़ेगा~~ करदेय क्षमता के निर्धारण में काफी योगदान रहता है। नागरिकों में सरकार के प्रति जितनी अधिक श्रद्धा और देशभक्ति होगी तथा सरकारी नीतियों का जितना अधिक ~~व्यक्ति~~ अधिक जनता समर्थन प्राप्त होगा उतना ही की करदान सामर्थ्य बढ़ेगी।

8. लोगों का जीवन स्तर
(Standard of Living of the People)

करदेय क्षमता लोगों के जीवन स्तर पर भी निर्भर होता है। करदेय क्षमता लोगों के उपभोग व्यय पर निर्भर होता है। और जीवन स्तर उपभोग व्यय जितना ऊंचा होता है जिन लोगों का उपभोग व्यय उतनी ही अधिक होती है। उनकी कर देने की क्षमता भी

9. प्रशासनिक कार्यकुशलता
(Administrative Efficiency)

प्रशासन की कार्यकुशलता से भी करदेय क्षमता प्रभावित होती है। यदि कर एकत्र करने वाले सरकारी तंत्र समरूप कर वसूलते है तो सभी करदाता ईमानदारी से करों का भुगतान करेंगे अर्थात उनकी करदेय-क्षमता बढ़ जायेगी।

10. आर्थिक स्थिति
(Economic Stituation)

तेजी की अवधि में अथवा व्यापार-चक्र के समृद्धिकाल में, लोगों की करदेय क्षमता बढ़ जाती है। इसके विपरीत मन्दी की स्थिति में लोगों की करदेय

क्षमता घट जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि करदेय क्षमता का निर्धारण उत्पादन की कुल बचत (surplus) द्वारा किया जाता है, जो कि न्यूनतम उपभोग पर उत्पादन की अधिकता से निर्मित होती है। इसके अलावा करदेय क्षमता इस बात पर भी निर्भर करती है कि सरकारी व्यय देश के अन्दर खर्च की जा रही है या बाहर। अतः करदेय क्षमता आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तत्वों से निर्धारित होता है।

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College